Sanchayan Ch-4: Teesri Kasam Ke Shilpkar Shailendra

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र - विष्णु प्रभाकर

1. Author Introduction: Vishnu Prabhakar

- जन्म: 21 जून 1912, मुजफ्फरपुर (हिमाचल प्रदेश, अब हरियाणा में)
- पूरा नाम: विष्णु प्रभाकर
- शिक्षा: एम.ए. (हिंदी), दिल्ली विश्वविद्यालय
- पेशा: लेखक, नाटककार, पत्रकार
- साहित्यिक क्षेत्र: उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, संस्मरण
- प्रमुख रचनाएं: आवारा मसीहा (शरतचंद्र की जीवनी - साहित्य अकादमी पुरस्कार), अर्धनारीश्वर, निशिकांत, धरती अब भी घूम रही है
- सम्मान: साहित्य अकादमी पुरस्कार (1993), पद्म भूषण (2004)
- विशेषता: जीवनियां लिखने में महारत, भावुक और संवेदनशील लेखन
- नाटक: आलोक, डॉक्टर, हत्या के बाद (सामाजिक विषय)
- पत्रकारिता: विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में योगदान
- मृत्यु: 11 अप्रैल 2009, नई दिल्ली (97 वर्ष की आयु में)
- योगदान: हिंदी साहित्य को समृद्ध करना, प्रेरणादायक जीवनियां लिखना

2. Subject Introduction: Shailendra

शैलेंद्र का परिचय:

- पूरा नाम: शंकरदास केसरीलाल शैलेंद्र
- जन्म: 30 अगस्त 1923, रावलपिंडी (अब पाकिस्तान में)
- पेशा: गीतकार, कवि, फिल्म निर्माता
- प्रसिद्धि: हिंदी सिनेमा के महानतम गीतकारों में से एक
- विशेषता: सरल, भावुक, मार्मिक गीत लिखना
- प्रमुख फिल्में (गीत): आवारा, बूट पॉलिश, श्री 420, अनाड़ी, दिल एक मंदिर, तीसरी कसम
- यादगार गीत: "मेरा जूता है जापानी", "अवारा हूं", "प्यार हुआ इकरार हुआ", "जीना यहां मरना यहां"
- साझीदारी: राज कपूर के साथ गहरी दोस्ती, कई फिल्मों में साथ काम
- तीसरी कसम: स्वयं निर्माता, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर आधारित

- पुरस्कार: फिल्मफेयर पुरस्कार, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (तीसरी कसम)
- मृत्यु: 14 दिसंबर 1966, मुंबई (43 वर्ष की अल्पायु में, दिल का दौरा)
- विरासत: उनके गीत आज भी लोकप्रिय, सदाबहार गीतों का खजाना

3. Essay Summary and Content

संस्मरण का विस्तृत सार:

भाग 1 - शैलेंद्र का व्यक्तित्व:
- विष्णु प्रभाकर शैलेंद्र को याद करते हैं - सरल, भावुक, संवेदनशील व्यक्ति
- बाहर से मजबूत लेकिन अंदर से बहुत नाजुक दिल वाले
- गरीबी में पले लेकिन बड़े दिल के मालिक
- दोस्तों से प्यार करने वाले, हमेशा मदद के लिए तैयार
- सफलता के बावजूद जमीन से जुड़े रहे
- पैसे की परवाह नहीं, कला और भावनाओं को प्राथमिकता
- सादगी और विनम्रता उनकी पहचान

भाग 2 - संघर्ष के दिन:
- रावलपिंडी से मुंबई आना - सपनों के साथ
- शुरुआत में बहुत संघर्ष, गरीबी, भूख
- छोटी-मोटी नौकरियां करना पड़ीं
- कविता लिखना जारी रखा - यही जीवन का सहारा
- राज कपूर से मुलाकात - जिंदगी बदल गई
- पहली बड़ी फिल्म "बरसात" (1949) - राज कपूर की
- "बरसात में हमसे मिले तुम सजन" - सुपरहिट गीत
- इसके बाद कोई पीछे मुड़कर नहीं देखा

भाग 3 - राज कपूर के साथ दोस्ती:
- राज कपूर और शैलेंद्र - अटूट दोस्ती, भाईचारा
- एक-दूसरे को समझते थे, एक-दूसरे की कमियां पूरी करते थे
- राज कपूर के सभी बड़ी फिल्मों में शैलेंद्र के गीत
- आवारा, श्री 420, जागते रहो - सब शैलेंद्र के गीत
- राज कपूर का सपोर्ट - शैलेंद्र की सबसे बड़ी ताकत
- कला पर चर्चा, रातों-रात बैठकर गीत लिखना
- दोनों सपने देखते थे - सिनेमा के जरिए समाज बदलने के

भाग 4 - "तीसरी कसम" फिल्म का निर्माण:

- फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी "मारे गये गुलफाम" पर आधारित
- शैलेंद्र स्वयं निर्माता बने - पहली और आखिरी बार
- बासु भट्टाचार्य - निर्देशक
- राज कपूर और वहीदा रहमान - मुख्य कलाकार
- ग्रामीण परिवेश, मासूम प्रेम कहानी
- संगीत: शंकर-जैकशिन, गीत: शैलेंद्र, मजरूह
- शानदार फिल्म लेकिन बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप

भाग 5 - फिल्म की असफलता और शैलेंद्र पर असर:

- तीसरी कसम - कला की दृष्टि से उत्कृष्ट, व्यावसायिक रूप से असफल
- राष्ट्रीय पुरस्कार मिला (Best Feature Film)
- लेकिन दर्शकों ने नहीं देखा, पैसा डूब गया
- शैलेंद्र ने अपनी सारी जमा-पूंजी लगा दी थी
- कर्ज में डूब गए, बहुत तनाव, चिंता
- मानसिक दबाव बढ़ता गया
- दिल की बीमारी, डॉक्टर ने आराम करने को कहा
- लेकिन पैसा कमाना जरूरी था - परिवार का खर्च, कर्ज चुकाना

भाग 6 - असमय मृत्यु:

- 14 दिसंबर 1966, मुंबई में दिल का दौरा
- केवल 43 साल की उम्र - बहुत जल्दी चले गए
- "तीसरी कसम" की असफलता ने तोड़ दिया
- कला के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया
- लेकिन सिस्टम ने साथ नहीं दिया
- दोस्तों, परिवार को सदमा
- हिंदी सिनेमा ने एक महान गीतकार खो दिया

4. Shailendra as an Artist

गीतकार के रूप में शैलेंद्र:

विशेषताएं:

- सरल भाषा: आम बोलचाल की भाषा, समझने में आसान गीत
- गहरी भावनाएं: हर गीत दिल से निकला हुआ, मार्मिक
- सामाजिक चेतना: गरीबी, असमानता, समाज की समस्याओं पर गीत

- रोमांटिक गीत: प्यार भरे, मधुर गीत जो दिल को छू जाएं
- देशभक्ति: राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत गीत
- सार्वभौमिकता: हर वर्ग, हर उम्र के लोग समझ सकें

प्रसिद्ध गीतों के उदाहरण:
- "मेरा जूता है जापानी" (श्री 420) - सामाजिक टिप्पणी
- "अवारा हूं" (आवारा) - जीवन दर्शन
- "प्यार हुआ इकरार हुआ" (श्री 420) - सदाबहार प्रेम गीत
- "जीना यहां मरना यहां" (मेरा नाम जोकर) - जीवन की सच्चाई
- "दोस्त दोस्त ना रहा" (संगम) - दोस्ती का दर्द
- "तू प्यार का सागर है" (सीमा) - भक्ति गीत

गीत लेखन की प्रक्रिया:
- पहले कहानी, पात्र, परिस्थिति को गहराई से समझना
- फिर उस परिस्थिति में खुद को रखकर महसूस करना
- जो दिल से निकले वही लिखना
- कई बार रातों-रात बैठकर गीत पूरे करना
- म्यूजिक डायरेक्टर के साथ बैठकर धुन पर काम करना
- गीत ऐसा हो कि सुनने वाला उसे जी सके

समाज के प्रति जिम्मेदारी:
- शैलेंद्र मानते थे कि गीतकार की समाज के प्रति जिम्मेदारी है
- फिल्में केवल मनोरंजन नहीं, समाज बदलने का माध्यम
- गीतों में सकारात्मक संदेश, मूल्य होने चाहिए
- गरीबों, मजलूमों की आवाज बनना चाहिए
- समाज में जागरूकता लाने का प्रयास

5. Detailed Analysis of Teesri Kasam

तीसरी कसम - विस्तृत विश्लेषण:

कहानी:
- फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी "मारे गये गुलफाम" पर आधारित
- हीरामन - गाड़ीवान (राज कपूर), हीराबाई - नौटंकी कलाकार (वहीदा रहमान)
- मासूम प्रेम कहानी, ग्रामीण परिवेश
- तीन कसमें: (1) बांस नहीं ले जाएगा, (2) चोरी का माल नहीं ढोएगा, (3) नौटंकी वालों को नहीं ले जाएगा
- लेकिन हीराबाई से प्यार हो जाता है, तीसरी कसम टूट जाती है

फिल्म की विशेषताएं:

- ग्रामीण जीवन का सच्चा, खूबसूरत चित्रण
- सादगी और मासूमियत - बिना किसी दिखावे के
- प्राकृतिक दृश्य - असली गांव में शूटिंग
- कलाकारों का शानदार अभिनय - राज कपूर और वहीदा रहमान
- संगीत - मधुर, लोक संगीत का प्रभाव
- गीत: "सजन रे झूठ मत बोलो", "पान खाये सैंयां हमारो", "दुनिया बनाने वाले"
- सिनेमैटोग्राफी - उत्कृष्ट, हर फ्रेम एक पेंटिंग

निर्माण की चुनौतियां:

- बजट सीमित था, लेकिन शैलेंद्र ने कोई कंप्रोमाइज नहीं किया
- शूटिंग में कठिनाइयां - ग्रामीण इलाके में, सुविधाओं का अभाव
- समय और पैसा दोनों ज्यादा लगा
- शैलेंद्र का सपना था एक परफेक्ट फिल्म बनाना
- हर डिटेल पर ध्यान, कोई शॉर्टकट नहीं

व्यावसायिक असफलता:

- फिल्म 1966 में रिलीज हुई
- आलोचकों ने सराहा, पुरस्कार मिले
- लेकिन दर्शक सिनेमा हॉल में नहीं आए
- उस समय एक्शन, मसाला फिल्मों का दौर था
- धीमी, सादी फिल्म को दर्शक नहीं चाहते थे
- बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप
- शैलेंद्र का सारा पैसा डूब गया

बाद में मान्यता:

- आज "तीसरी कसम" को हिंदी सिनेमा की क्लासिक माना जाता है
- फिल्म इंस्टीट्यूट में पढ़ाई जाती है
- सिने-प्रेमियों की पसंदीदा फिल्म
- अफसोस कि शैलेंद्र यह देख नहीं पाए
- कला अपनी जगह बना ही लेती है, भले देर से सही

6. Major Themes and Messages

मुख्य विषय:

कला और व्यावसायिकता का द्वंद्व:

- शैलेंद्र ने कला को प्राथमिकता दी, पैसे को नहीं
- "तीसरी कसम" - कला का नमूना लेकिन व्यावसायिक रूप से फ्लॉप
- सवाल: क्या सच्ची कला को व्यावसायिक सफलता नहीं मिल सकती?
- क्या कलाकार को व्यावसायिकता की परवाह करनी चाहिए?
- संतुलन जरूरी है - कला भी, व्यावसायिकता भी

कलाकार का संघर्ष:
- शैलेंद्र का जीवन - संघर्ष से भरा
- शुरुआत में गरीबी, फिर सफलता, फिर असफलता
- कलाकार का जीवन अनिश्चित, उतार-चढ़ाव वाला
- समाज की सराहना चाहिए लेकिन जरूरी नहीं कि मिले
- आर्थिक सुरक्षा की कमी

सच्ची दोस्ती:
- शैलेंद्र और राज कपूर - अटूट दोस्ती का उदाहरण
- कला में साझेदारी, जीवन में भाईचारा
- एक-दूसरे का सपोर्ट, विश्वास
- सफलता-असफलता दोनों में साथ
- आज ऐसी दोस्ती दुर्लभ है

सादगी और विनम्रता:
- शैलेंद्र सफल होकर भी जमीन से जुड़े रहे
- दिखावा नहीं, सादा जीवन
- लोगों से प्यार, अहंकार नहीं
- पैसे से ज्यादा रिश्तों को महत्व

कला की अमरता:
- शैलेंद्र नहीं रहे लेकिन उनके गीत आज भी जिंदा
- सच्ची कला कभी मरती नहीं
- व्यावसायिक सफलता अस्थाई, कलात्मक सफलता स्थाई
- "तीसरी कसम" आज क्लासिक है
- कलाकार का असली पुरस्कार उनकी कला की अमरता

समय से पहले प्रतिभा:
- कुछ कलाकार अपने समय से आगे होते हैं
- शैलेंद्र भी ऐसे ही थे - समय ने पहचाना नहीं

- बाद में समाज समझा उनकी प्रतिभा
- अफसोस कि कलाकार जीते जी सराहना नहीं पाते

7. Literary Style and Technique

विष्णु प्रभाकर की लेखन शैली:

संस्मरण शैली:
- व्यक्तिगत अनुभव और यादों का वर्णन
- भावनात्मक, मार्मिक लेखन
- शैलेंद्र के साथ बिताए पलों का जीवंत चित्रण
- पाठक को लगता है वो भी वहां मौजूद है

जीवनी तत्व:
- शैलेंद्र के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं
- संघर्ष, सफलता, असफलता - सभी का वर्णन
- व्यक्तित्व का विश्लेषण - बाहर और अंदर दोनों
- समय क्रम में घटनाओं का विवरण

भाषा:
- सरल, सहज हिंदी
- भावुकता से भरी लेकिन अति नहीं
- वर्णनात्मक - दृश्यों का जीवंत चित्रण
- संवादात्मक - कहीं-कहीं बातचीत का वर्णन

भावनात्मक अपील:
- पाठक की संवेदनाओं को जगाना
- शैलेंद्र के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना
- उनकी प्रतिभा और संघर्ष की सराहना
- अफसोस कि प्रतिभाशाली कलाकार को मिला नहीं

उद्देश्य:
- शैलेंद्र को याद रखना, श्रद्धांजलि देना
- नई पीढ़ी को उनके बारे में बताना
- कलाकारों के संघर्ष को उजागर करना
- समाज को कला का महत्व समझाना

8. Important Exam Questions

प्रश्न 1: शैलेंद्र के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएं क्या थीं?
उत्तर: शैलेंद्र का व्यक्तित्व अद्भुत था: (1) सरल और सहज - कोई दिखावा नहीं, जमीन से जुड़े, (2) भावुक और संवेदनशील - हर चीज को दिल से महसूस करते थे, (3) कला के प्रति समर्पित - पैसे से ज्यादा कला को महत्व, (4) दोस्तों से प्यार - राज कपूर के साथ गहरी दोस्ती, (5) सामाजिक चेतना - गरीबों, मजलूमों की आवाज, (6) मेहनती - रातों-रात गीत लिखना, (7) विनम्र - सफलता के बावजूद अहंकार नहीं। ये सब गुण उन्हें महान बनाते थे।

प्रश्न 2: "तीसरी कसम" फिल्म की असफलता ने शैलेंद्र पर क्या प्रभाव डाला?
उत्तर: तीसरी कसम की असफलता शैलेंद्र के लिए विनाशकारी साबित हुई: (1) आर्थिक संकट - अपनी सारी जमा-पूंजी लगा दी थी, सब डूब गया, (2) कर्ज - बहुत कर्ज में डूब गए, चुकाने का कोई रास्ता नहीं, (3) मानसिक तनाव - चिंता, दबाव बहुत बढ़ गया, (4) स्वास्थ्य पर असर - दिल की बीमारी, तनाव से और बिगड़ी, (5) आत्मविश्वास में कमी - शायद खुद को दोषी मानने लगे, (6) असमय मृत्यु - केवल 43 साल में दिल का दौरा। कहा जा सकता है कि तीसरी कसम की असफलता ने उन्हें तोड़ दिया और जल्दी मौत की वजह बनी।

प्रश्न 3: शैलेंद्र और राज कपूर की दोस्ती की क्या विशेषताएं थीं?
उत्तर: दोनों की दोस्ती अनोखी थी: (1) गहरा भाईचारा - खून के रिश्ते से बढ़कर, (2) कला में साझेदारी - राज कपूर की सभी फिल्मों में शैलेंद्र के गीत, (3) आपसी समझ - एक-दूसरे को बिना कहे समझ जाते थे, (4) विश्वास - पूरा भरोसा, कोई शक नहीं, (5) सपोर्ट - सफलता-असफलता दोनों में साथ, (6) समान विचारधारा - सिनेमा के जरिए समाज बदलने का सपना, (7) रचनात्मकता - साथ बैठकर रातों-रात काम करना। ऐसी दोस्ती आज दुर्लभ है।

प्रश्न 4: शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएं हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर: विशेषताएं: (1) सरल भाषा - आम बोलचाल की भाषा, जैसे "मेरा जूता है जापानी", (2) गहरी भावना - दिल को छू जाने वाले, जैसे "अवारा हूं", (3) सामाजिक चेतना - समाज की समस्याओं पर, जैसे मेरा जूता... में गरीबी की बात, (4) सार्वभौमिकता - हर कोई समझ सके, हर उम्र के लोग, (5) मधुरता - प्यार भरे गीत जैसे "प्यार हुआ इकरार हुआ", (6) जीवन दर्शन - जैसे "जीना यहां मरना यहां"। उनके गीत आज भी लोकप्रिय हैं क्योंकि सच्चे दिल से लिखे गए थे।

प्रश्न 5: कला और व्यावसायिकता के द्वंद्व को शैलेंद्र के जीवन के माध्यम से समझाइए।
उत्तर: शैलेंद्र का जीवन इस द्वंद्व का उदाहरण है: (1) तीसरी कसम - कलात्मक रूप से उत्कृष्ट लेकिन व्यावसायिक रूप से असफल, (2) शैलेंद्र ने कला को प्राथमिकता दी, पैसे की नहीं सोची, (3) परिणाम - आर्थिक बर्बादी, कर्ज, तनाव, (4) सबक - कलाकार को संतुलन चाहिए, कला भी महत्वपूर्ण, व्यावसायिकता भी, (5) दुखद - प्रतिभाशाली कलाकार को समाज ने पहचाना नहीं। आज तीसरी कसम क्लासिक है, लेकिन शैलेंद्र यह नहीं देख पाए। यह दिखाता है कि सच्ची कला अमर होती है, भले ही तात्कालिक सफलता न मिले।

प्रश्न 6: विष्णु प्रभाकर ने शैलेंद्र को श्रद्धांजलि क्यों दी? इस संस्मरण का क्या उद्देश्य है?
उत्तर: कारण: (1) शैलेंद्र महान गीतकार थे, हिंदी सिनेमा की धरोहर, (2) असमय मृत्यु - 43 साल में चले गए, बहुत जल्दी, (3) उनकी प्रतिभा को याद रखना जरूरी, (4) नई पीढ़ी उन्हें जाने, (5) कलाकारों के संघर्ष को उजागर करना। उद्देश्य: (1) श्रद्धांजलि - शैलेंद्र को याद करना, (2) प्रेरणा - युवा कलाकारों के लिए, (3) जागरूकता - समाज को कला का महत्व समझाना, (4) संदेश - कलाकारों का सम्मान करें, उनका साथ दें। यह संस्मरण भावनात्मक और शैक्षिक दोनों है।